यज्ञपात्रों के चित्र एवं परिचय

१ उत्तरारणि

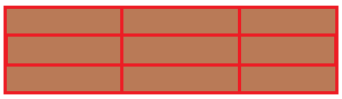

१ उत्तरारणि- शमीगर्भ अश्वत्थवृक्ष के काष्ठ से अग्नि उत्पादन के निमित्त बनाई जाती है। इसी काष्ठ में से एक लम्बा टुकड़ा (आठ अंगुल का) काटकर मन्थ बनाया जाता है।
उत्तरारणेरीशानदिक्संस्थमष्टांगुलं प्रमन्थं छित्वा। दे.या.प. पृष्ठ- १०४

२ अधरारणि

२ अधरारणि- जिस काष्ठ पर मन्थ रखकर अग्नि मन्थन किया जाता है, उसे अधरारणि कहते हैं। यह चौबीस अंगुल लम्बी, छः अंगुल चौड़ी और चार अंगुल ऊँची बनायी जाती है।
अधरारणिमुत्तराग्रां निधाय। दे.या.प. पृष्ठ- १०४

३ नेत्रम्

३ नेत्र- अग्निमन्थन के लिए मन्थ में बाँधी जाने वाली डोरी को नेत्र कहते हैं। यह चार हाथ लम्बी होती है। नेत्रं स्याद् व्यामपात्रकम्। य.पा. श्लो. ४.१

४ मन्थ

४ मन्थ- कील जैसा आठ अंगुल का लम्बा काष्ठ विशेष होता है, जिसमें रस्सी लपेटकर अग्नि मन्थन किया जाता है, उसे मन्थ कहते हैं। एकशलाकया मन्थः। का.श्रौ.सू. ५/८/१८

५ ओविली

५ ओविली- अग्निमन्थन करते समय मन्थ को जिस काष्ठ से दबाते हैं, उसे ओविली कहते हैं। यह बारह अंगुल लम्बी होती है। ओविली द्वादशांगुल्या- य.पा. श्लो ४१

६ अग्निहोत्रहवणी

६ अग्निहोत्रहवणी- विकंकत काष्ठ की बाहुमात्र लम्बी, आगे की ओर चार अंगुल गर्तवाली, हंसमुखी होती है। इससे अग्निहोत्र किया जाता है। अग्निहोत्रहवणी हंसमुखी। दे.या.प. पृ-६

७ वज्र (स्फ्य)

७ स्फ्य- यह यज्ञपात्र खदिर काष्ठ का बनता है। यह एक हाथ लम्बा, दोनों ओर धारवाला तथा आगे से नुकीला होता है। वज्र के समय आग्नीध्र नामक ऋत्विज इसे अपने हाथ में लिए रहता है। वज्र इसका नामान्तर है। स्फ्यश्च। का.श्रौ.सू.-१/३/३३

८ धृष्टि

८ धृष्टि- यह पात्र कपालोपधान से पूर्व अग्नि को हटाने में उपयोगी है। यह हाथ के पंजे के आकार की होती है। इसकी लम्बाई एक हाथ होती है। उपवेष इसका नामान्तर है। धृष्टिरसीत्युपवेषमादाय। का.श्रौ.सू.-२/४/२५

९ उपवेष

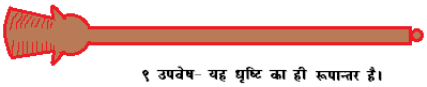

९ उपवेष- यह धृष्टि का ही रूपान्तर है।

१० उलूखल

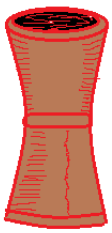

१० उलूखल- हविर्द्रव्य को कूटने में प्रयुक्त होने वाला यह यज्ञपात्र पलाश काष्ठ का बना होता है। यह बारह अंगुल ऊँचा और बीच में कृश होता है। पालाशः स्यादुलूखलः। दे.या.प. पृ-६